© July 2026 | IJIRT | Volume 13 Issue 2 | ISSN: 2349-6002

हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर जीवन

Soniya
Hindi literature Department M.G.A.H.V. WARDHA

***शोध सार*—समाज में जो कुछ भी घटित होता है। उसे ही साहित्य में आवश्यकता अनुसार प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक घटनाओं का संबंध जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव से जुड़ा होता है। ऐसे ही यहाँ बात किन्नर जीवन की होती है। जिन्हें समाज में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे- हिजड़ा, छक्का, थर्ड जेंडर, खुसरा आदि। कोई बच्चा जब किन्नर का जन्म लेता है तो उसे परिवार त्याग देता है या उन्हें किन्नर समाज के लोग उठा कर ले जाते है। साधारण परिवार में किन्नर बच्चे पूर्णत अपनाएं नहीं जाते उन्हें हीनभावना या ग्लानि का सामना प्रत्येक क्षण करना पड़ता है। किन्नर शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, किं और नर जिसका अर्थ है वह लोग जो न स्त्री वर्ग में आते है न ही पुरुष वर्ग में अपितु उनको समाज में तृतीय लिंग का दर्जा दिया गया है। किन्नर को चार वर्गों में विभक्त किया गया है - बूचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा।**

हिन्दी उपन्यासों में किन्नर जीवन पर लिखे गए उपन्यासों में उनके दर्द, एकाकीपन, और जीवन को रेखांकित किया गया है। कुछ प्रमुख रचनाकार जैसे - चित्रा मुद्गल, प्रदीप सौरभ, नीरजा माधव व निर्मला भुराड़िया आदि ने किन्नर जीवन की बारीकियों को उपन्यास में कथा व प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

***बीज शब्द*—किन्नर , हिजड़ा, ट्रांसजेंडर , साहित्य , सामाजिक जीवन, मानवीय संवेदना, परित्यक्त, अकेलापन।**

I. परिचय

समाज के वंचित, शोषित तथा हाशिएकृत स्त्री, किन्नर, दलित और आदिवासी समूहों को अपने हक के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। यह समुदाय अपने हक के लिए निरंतर संघर्षरत होते हैं। समाज की मुख्यधारा में पुरुषों उच्च दर्जे पर काबिज है। स्त्रियाँ को भी दोयम दर्जे में रख दिया गया है। मगर इनके अलावा एक और तबका है, जिसे तृतीय लिंग की संज्ञा दी गई है। वे भी इसी समाज का ही हिस्सा है। परंतु इन्हे समाज में पुरुष तो बहुत दूर, महिलाओं के बराबर भी दर्ज नहीं मिलता। यही वजह है कि अक्सर इन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। हम देखते ही रहते हैं कि केवल प्रजनन अक्षमता के कारण स्त्री को बांझ कहकर कितना तिरस्कृत किया जाता है। ऐसे में प्रजनन क्षमता से हीन तृतीय लिंगी मनुष्य अर्थात किन्नरों के लिए समाज में कितनी घृणा भरी होगी इसका स्वतः ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

15 अप्रैल 2014 के दिन भारत के सर्वोच्च न्यायलय ने एक क्रांतिकारी निर्णय लिया। इसने समाज के हाशियकृत तबके को राहत प्रदान की। यह मुख्यधारा के समाज से दूर रहने वाले लोगों को सम्मानित दर्जा प्रदान करने के लिए किया गया प्रथम प्रयास था। हिजड़े, ट्रांसजेंडर मनुष्यों को तृतीय लिंग के तौर पर कानूनी मान्यता प्रदान करते हुए न्यायलय ने ट्रांस समुदाय के लोगों के मानवाधिकार को सुरक्षित किया। अब तक किन्नर समाज के लोगों ने स्वयं को सदैव वंचित, उपेक्षित और पीड़ित ही पाया था। वर्तमान में तृतीय लिंग को कानूनन सम्मानजनक दर्जा प्राप्त हो गया है। अब सरकारी एवं अन्य कार्यों हेतु स्त्री, पुरुष कॉलम के साथ तृतीय लिंग चयन को भी मान्य किया गया है। जिससे अब उन्हे सामाजिक भागीदारी हेतु वैधानिक संरक्षण मिल गया।
वह भी सम्मानपूर्वक जीवन की चाह में स्वयं की पारंपरिक और रूढ छवि को बदलने की कोशिश कर रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। परंतु कानूनों से इतर बात करें तो अब भी इन्हें भेदभाव का शिकार बनाया जाता है। अब भी उन्हें हिजड़ा, छक्का आदि जैसे अपमानसूचक नामों से संबोधित किया जाता है। इस भेद को दूर करने के लिए आवश्यक है कि समाज की मानसिकता में सकारात्मक बदलाव आएं। यह बदलाव केवल अपनेपन की भावना, शिक्षा और जागरुकता से ही संभव है। आमजन द्वारा उन्हें अपनाएं जाने से अब किन्नर समुदाय धीरे-धीरे समाज की मुख्यधारा में लौट रहे हैं।

II. किन्नर की उत्पत्ति और परिभाषा

विकिपीडिया के अनुसार- "किन्नर हिमालय में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है, जिसके प्रधान केंद्र हिमवत और हेमकूट थे। पुराणों और महाभारत की कथाओं एवं आख्यानों में भी उनकी चर्चाएं प्राप्त होती ही हैं। उनके नाम किं+नर से स्पष्ट है, उनकी योनि और आकृति पूर्णत: मनुष्य की नहीं मानी जाती।"[1] प्रस्तुत कथन से तात्पर्य उनसे है, जो न स्त्री योनि में जन्म लेते हैं न ही पुरुष योनि में। लिंग विकृति होने के कारण उन्हें हिजड़ा या किन्नर कहा जाता है। 'हिजड़ा' शब्द सुनते ही मानसपटल पर अतिरेक शृंगार किए चटख वेशभूषा वाले असामान्य व्यवहार और चाल-ढाल वाले लोगों की छवि प्रस्तुत होती है। ऐसी वेशभूषा और चाल-ढाल वाले लोगों को तृतीय लिंग के रूप में चिह्नित किया जाता है।

1

III. विभिन्न भाषाओं में किन्नर शब्द

अलग-अलग क्षेत्रों में किन्नर शब्द को अलग-अलग नामों से संबोधित किया जाता है । स्थानीय भाषा या बोली के अनुरूप भी कुछ किन्नरों के लिए कुछ देशज शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।

1. हिजड़ा उर्दू भाषा का शब्द है, जो अरबी के हिज्र शब्द से लिया गया है । जिसका आशय होता है अपने कबीले को छोड़ना अर्थात घर परिवार एवं समाज से अलग होना । उर्दू अथवा हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले अन्य शब्दों में इन्हें हिजिरा, हिजदा, हिजादा, हिजारा और हिजराह आदि से भी संबोधित किया जाता है । उर्दू का ख्वाजा सरा शब्द हिजड़ा का समानार्थी है । खसुआ और खुसरा जैसे दूसरे अन्य शब्द भी उर्दू भाषी है ।
2. बंगाली में इन्हें हिजरा, हिजला, हिजरी से संबोधित किया जाता है ।
3. अंग्रेजी में इन्हें 'यनक' अथवा 'हर्मा फ्रोडाइट' से जोड़ा जाता है ।
4. तमिल में इन्हें अली, अरावनी, अरुवनी कहा जाता है ।
5. तेलुगू में उन्हें नपुंसुकुडू, कोज्जा अथवा मादा कहा जाता है ।
6. पंजाबी में इन्हें खुसरा, जंखा कहा जाता है ।
7. सिंधी में इन्हें खदरा कहा जाता है ।
8. मराठी में इन्हें छक्का, हिजड़ा आदि कहा जाता है ।
9. गुजराती भाषा में इन्हें पवैया कहा जाता है ।
10. संस्कृत भाषा में इन्हें किन्नर कहा गया है ।

IV. वर्ग विभाजन

किन्नर को चार वर्गों में विभक्त किया गया है - बूचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा । बूचरा वे होते है, जो जन्मजात किन्नर होते हैं । असल में बूचरा ही वास्तविक किन्नर की श्रेणी में आते हैं । क्योंकि ये बचपन से ही लिंग दोष से पीड़ित होते हैं । शारीरिक और मानसिक वेदना को झेलते हैं । नीलिमा कोटि के हिजड़े किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ों के निकट मानते हैं अर्थात वे स्वयं को किन्नर समाज के लिए समर्पित कर देते हैं । मनसा किन्नर की बात की जाए तो ये तन के स्थान पर मानसिक रूप से खुद को विपरीत लिंग अथवा स्त्री लिंग के प्रति अधिक निकट पाते हैं । अंत में हंसा किन्नर किसी यौन अक्षमता के कारण स्वयं को हिजड़ों के साथ जोड़ लेते हैं अर्थात शारीरिक दोष या नपुंसकता के कारण हंसा कहलाते हैं । इन चार श्रेणियों के अतिरिक्त आज समाज में एक और प्रकार के किन्नर दिखाई देते हैं । ये नकली हिजड़े होते हैं, जो वास्तव में पुरुष होते हैं पर धन लाभ के लिए खुद से ही हिजड़े का वेश धारण कर लेते हैं । इनको 'अबुआ' कहा जाता है । जबर्दस्ती बनाए गए हिजड़े 'छिबरा' कहलाते हैं ।

V. हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन

हिजड़ा या किन्नर होना प्राकृतिक है । यह केवल देह विकृति है परंतु इस एक विकृति के कारण सारा जीवन संघर्षमय हो जाता है । भारतीय परंपरा में किन्नरों का विशेष दर्जा दिया है । किसी भी शुभ अवसर पर इनकी उपस्थिति का उत्साहपूर्वक स्वागत किया जाता है । कहते हैं कि इनकी दुआ और बददुआ दोनों लगती है । जिस कारण कई बार लोग उनका खुले दिल से स्वागत करते हैं और कभी डर से । हिन्दी उपन्यासों में थर्ड जेंडर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न रचनाकारों ने कलम चलाई है । जिनमें प्रमुख है- नीरजा माधव, प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराड़िया, भगवंत अनमोल और चित्रा मुद्गल आदि । इनके उपन्यासों की खास बात यह है कि इसमें लेखकों का व्यक्तित्व भी झलकता है । कुछ उपन्यास रिपोर्ताज शैली में लिखे गए है तो वहीं कुछ पत्रात्मक शैली में लिखे गए है । पत्र व्यक्ति के निजी अनुभव व एकांत का ब्यौरा होता है ।

नीरजा माधव द्वारा लिखा गया चर्चित उपन्यास 'यमदीप' समाज की क्रूरता, अपंगता और स्वार्थपरता को चित्रित करता है । यह उपन्यास समाज को आईना दिखाने का प्रयास करता है । लेखिका ने उपन्यास का शीर्षक बहुत ही प्रतीकात्मक रूप को ध्यान में रखते हुए लिया है । 'यमदीप के दीप' की सार्थकता पर बात करते हुए प्रो. नीरू कहते हैं कि " 'दीपक' भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक बहुत ही प्रिय प्रतीक रहा है जो न जाने कितने अर्थों को व्यंजित करता रहा है । यह कभी 'आत्मज्ञान' का ('सब अंधियारा मिट गया, जब दीपक देख्या मांहि' - कबीर), कभी आशा और विश्वास का ('है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है' - बच्चन), कभी सामान्य जन का (शत-शत दीप इकट्ठे होंगे, अपनी-अपनी चमक लिए - बच्चन), कभी व्यष्टि का ('यह दीप अकेला' - अज्ञेय), कभी आत्मतत्त्व का ('मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' - महादेवी वर्मा) प्रतीक रहा है । भारतीय संस्कृति की उदगाता नीरजा माधव ने इन अर्थों में एक नया अर्थ जोड़ दिया है - यमदीप के माध्यम से ।"[2] यमदीप अर्थात वह दीप जो स्वीकार योग्य नही माना गया । जिसके होने न होने से परिवार या समाज को कोई फर्क नही पड़ता अपितु वह केवल बोझ ही समझा जाता है । जिस कारण लिंग दोषी बच्चे को स्वयं से अलग करना ही बेहतर समझा जाता है ।

लेखिका ने उपन्यास की भूमिका में ही यमदीप के बारे में स्पष्टीकरण दे दिया है । वह लिखती हैं - " घर के एक दीये को केवल यम से संवाद करने के लिए उठाकर घूर (कूड़ा-करकट) पर रख देना और फिर उधर मुड़कर भी न देखना कि वह कब जलते-जलते बुझा, सत्य से विमुख होना है ।"[3] यहाँ किन्नर को यमदीप के समान माना गया है । यमदीप अर्थात यम के लिए प्रज्ज्वलित दीप । जो कब बुझ जाएँ कोई जानना नहीं चाहता । ठीक उसी तरह जैसे घर में कोई तृतीय लिंगी संतान जन्म लेता है तो उसे भी किन्नर समाज को सौंप देने के बाद उसका पता नही लगाया जाता । किन्नरों की सामाजिक भूमिका की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए लेखिका मुंबई जैसे महानगर की स्थिति बयान करती है । मुंबई के एक कंपनी में लेनेदारों से बकाया धन वसूलने

[2] (सं) खान, डॉ. एम. फिरोज. (2017). *थर्ड जेंडर: कथा आलोचना.* कानपुर: अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ संख्या - 51.

[3] माधव, नीरजा. (2009). *यमदीप.* नई दिल्ली: सुनील साहित्य सदन. पृष्ठ संख्या - 7.

के लिए किन्नरों को नियुक्त किया गया है । आश्चर्य की बात यह है कि जिन लेनदारों ने आज तक एक पैसा नही लौटाया । वे किन्नरों के जाने पर उन्हें पूरी बकाया राशि दे देते हैं । उपन्यास में लेखिका ने किन्नर समाज को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने को रोजगार प्रदान करने की पहल को दिखाया है ।

उपन्यास में ट्रांसफोबिया का जिक्र है । विकिपीडिया के अनुसार - "ट्रांसफोबिया विचारों और घटनाओं का एक संग्रह है, जिसमें ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, भावनाओं या कार्यों की एक शृंखला शामिल है या सामान्य रूप से ट्रांसनेस है । ट्रांसफोबिया में डर, घृणा, हिंसा, क्रोध या ऐसे लोगों के प्रति महसूस या व्यक्त की गई बेचैनी शामिल हो सकती है, जो सामाजिक लिंग अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है । इसे अक्सर होमोफोबिक विचारों के साथ व्यक्त किया जाता है और इसलिए इसे अक्सर होमोफोबिया का एक पहलू माना जाता है । ट्रांसफोबिया नस्लवाद और लिंगवाद के समान पूर्वाग्रह और भेदभाव का प्रकार है ।"[4] ट्रांसफोबिया वह दशा है, जिससे परिवार और तृतीयलिंगी बच्चा दोनों ही पीड़ित होते हैं । इसके अंतर्गत सबसे पहले अस्तित्त्व और सम्मान का संकट खड़ा होता है । जिससे वह गंभीर रूप से हीनभावना ग्रसित हो जाते हैं ।

महताब गुरु, हिजड़ा नाज बीबी, छैल बिहारी, सोना और मानवी आदि उपन्यास के प्रमुख पात्र है । नंदरानी अर्थात नाज बीबी के माता-पिता और महताब गुरु के आपसी संवाद के माध्यम से समाज के यथार्थ को बेहद मार्मिक रूप में लेखिका ने वर्णित किया है । वह कहते हैं कि " आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबूजी और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते… दुनिया में बदनामी और हंसी-हंसारत के डर से । हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बरदाश्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग । लूली-लंगड़ी होती, कानी-कोतर होती, तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे… इसलिए इसे अब इसके हाल पर छोड़ दीजिये । यही उसका भाग्य था, यही बदा था… सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लिया ।"[5] तृतीय लिंगी होने और उसके घर पर न रह सकने के कारण को सम्मान से जोड़ते हुए लेखिका ने समाज के कटु सत्य को उजागर किया है । जहां विकलांग बच्चे को तो परिवार वाले स्वीकार कर लेते हैं पर लिंगदोषी अर्थात किन्नर शिशु के लिए अपमानित महसूस करते हैं । एक ना बच्चे को पारिवारिक जीवन हेतु सामाजिक स्वीकृति न मिल पाना समाज के नैतिक पतन को दर्शाता है ।
किन्नर समाज जहां आर्थिक रूप से समर्थ होने का प्रयास कर रहा है । किंतु इन्हें बारंबार अपमानित होना पड़ता है । यमदीप उपन्यास में किन्नर जीवन की समस्या और उनकी भावनाओं को सोना के माध्यम से व्यक्त किया गया है । केवल बच्चे को जन्म देना मातृत्व को पूर्ण नही करता अपितु बच्चे का सही पालन-पोषण, शैक्षिक जिम्मेदारियाँ भी उसमें शामिल है । नाज बीबी सोना को गोद लेकर इन जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है ।

किन्नर विमर्श, समलैंगिकता, गे व लेस्बियन संबंधों को आधार बनाते हुए लेखक प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' नामक उपन्यास लिखा है । इस उपन्यास में 'LGBTQ' समुदाय के लोगों के जीवन को मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया है । इस उपन्यास को 'अंतरराष्ट्रीय इंदु कथा सम्मान' प्राप्त हुआ है । प्रदीप सौरभ ने लेखन में नवीन प्रयोग करते हुए यह उपन्यास लिखा है । सामान्य जन के लिए किन्नरों की दुनिया एक वर्जित दुनिया है । किन्नर समाज में जो लोग है, वह परिवार परित्यक्त, समाज बहिष्कृत आदि होते हैं । घर में हीनता का शिकार होने के बाद वह खुले आम समाज के हीनत्व को भी स्वीकार करते हैं । इन्हीं सब समस्याओं और उनके जीवन के यथार्थ को लेखक ने उपन्यास में प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास में आरा, बलिया, छपरा, देवरिया आदि शहरों को एबीसीडी के नाम से इंगित किया है । उपन्यास का आरंभ सिद्धार्थ एंक्लेव में रहने वाले गौतम साहब से होता है, जो कि सेंट्रल सेक्रेटरियट में यूडीसी थे । गौतम साहब की तीन बेटियाँ थी पर उन्हें सदा ही बेटे का मोह लगा रहता था । जब भी कोई शुभ कार्य होता है तो उसमें किन्नरों को बुलाया जाता या खबर पाकर वह स्वयं ही चले आते । ऐसे ही एक बार वह बच्चे की जन्म की बधाइयाँ देने गौतम साहब के घर पहुँचते हैं परंतु उनका स्वागत करने के लिए घर का कोई सदस्य दरवाजा नही खोलता । सुंदरी और बिंदिया किन्नर है । जो जाते हुए गौतम साहब को बददुआ देते हुए कड़ुवाहट के साथ कहती है कि "हिजड़ों को शगुन नही दोगे तो लल्ला हिजड़ा निकलेगा ।"[6] हिजड़े बददुआ देकर चले जाते हैं । गौतम साहब बेटे के किन्नर पैदा होने से ही दुखी है । वे नही चाहते की किसी को भी उनके घर किन्नर पैदा होने की जानकारी मिले । इसमें किसी का भी दोष नही है । न ही किन्नर जन्मे बच्चे का और न ही उसके माता-पिता का और न ही किन्नर समाज का । किन्नरों को सम्मान की दृष्टि से नही देखा जाता । उनसे घृणा बोध व्यक्त किया जाता है । उस परिस्थिति में आर्थिक संकट को दूर करने के लिए वे नाच-गाकर अपना पेट पालते हैं । सभी समुदाय के लिए आर्थिक स्वतंत्रता बहुत महत्त्वपूर्ण होती है । विनीत से बनी विनीता अपना ब्यूटी पार्लर चलाती है और आर्थिक रूप से समृद्ध होने का प्रयास करती है । तीसरी ताली में आए हिजड़े, गे, ट्रांसजेंडर आदि की कथा में सबसे महत्त्वपूर्ण है - आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ । जो संपूर्ण उपन्यास का सार तत्व है ।

विनीत के शरीर में होने वाले शारीरिक बदलावों से परिचय कराते हुए लेखिका लिखती है कि "विनीत घर से निकलने में कतराने लगा । बाहर निकलता तो उसके साथ खेलने वाले बच्चे भी उससे किनारा कर लेते । वह अजीब मानसिकता से गुजर रहा था । कई-कई हफ्ते घर के अंदर बंद रहता । उसे लगता कि उसके पिता उसे जबरिया लड़का बनाने पर तुले हैं । वह अपनी बहनों की तरह ही अपने को लड़की मानता था । उसे लड़कों के कपड़े पहनने में परहेज होने लगा । घर में जब कोई न होता

[4] https://en-m-wikipedia org.translate.goog/wiki/Transphobia?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc

[5] माधव, नीरजा. (2009). *यमदीप.* नई दिल्ली: सुनील साहित्य सदन. पृष्ठ संख्या – 93.

[6] सौरभ, प्रदीप. (2011). *तीसरी ताली.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या – 11.

तो वह अपनी बहनों कि पैंटी-ब्रा पहन लेता। बिंदी लगाता। लिपस्टिक लगाता। शीशे में घंटों अपने-आपको निहारता।"[7] लेखिका ने बच्चे में आने वाले मानसिक बदलावों को भी ध्यान में रखते हुए बालमन के द्वंद्व को चित्रित किया है। गौतम साहब, विनीत, राजा चौधरी, सुविमल, मंजु, यास्मिन, ज़ुलेखा आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है।

उपन्यास के अंत में अन्ना मौसी की अंतिम यात्रा का जिक्र है। "दिल्ली में आमतौर पर हिजड़े के शव को रात को डंडों से मारते, उस पर चप्पल-जूते बरसाते और सड़क पर खींचते हुए शमशान घाट ले जाते हैं। इस तरह शव को शमशान ले जाने के पीछे मान्यता यह है कि मरनेवाला दोबारा तीसरी योनि में जन्म नहीं लेगा।"[8] किन्नरों की अंतिम यात्रा किसी सामान्य व्यक्ति ने नही देखी होती। उनकी शवयात्रा के पीछे कई मिथक प्रचलित है जो अब तक चलती आ रही है। इनका शव खुलेआम नही ले जाया जाता। उनकी मौत पर सभी यह कामना करते हैं कि मरने वाले का अगला जन्म अवहेलना का शिकार न हो।

लेखिका चित्रा मुद्गल ने विविध विषयों पर उपन्यास, कहानियाँ लिखी। उनमें से एक विषय किन्नर विमर्श को आधार बनाते हुए वर्ष 2016 में 'पोस्ट बॉक्स नं- 203 नालासोपारा' नामक कृति लिखी। पत्रात्मक शैली में लिखी गई इस पुस्तक को वर्ष 2018 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ है। लेखिका ने उपन्यास में किन्नर समाज की वास्तविक जीवन शैली, मानसिक द्वंद्व, अस्तित्व के संकट और सामाजिक दबाव का यथार्थ वर्णन किया है।

प्रस्तुत उपन्यास मुंबई में रहने वाले बच्चे विनोद पर आधारित है। जो जननांग विकसित न हो पाने से लिंग दोष का शिकार है। वह विनोद से बिमली तक का सफर तय करता है। बच्चों का लंबे समय तक परिवार के साथ रहना फिर सामाजिक दबाव के कारण अपने समाज की ओर पलायन करना, न सिर्फ सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण से कष्टकारी होता है बल्कि भावात्मक रूप से विगलित करने वाला होता है। विनोद उर्फ बिमली के माध्यम से लेखिका ने एक प्रगतिशील किन्नर का प्रभावी व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है। जो सामाजिक बदलावों के लिए शिक्षा को आवश्यक मानता है। शिक्षा के महत्त्व को उजागर करते हुए वह कहता है "पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है। कोई रास्ता ही नही छोड़ा गया है हमारे लिए"[9] । विनोद की माँ उसे बहुत बड़ा गणितज्ञ बनाना चाहती थी परंतु विषम परिस्थितियों ने उसे सम्मानपूर्वक जीने का अवसर भी नहीं दिया। घर में शुरुआती दिनों में मिले संस्कार और शिक्षित वातावरण ने विनोद के मानस में जागरूकता का संचार किया। वह पूनम को भी शिक्षित करना चाहता है। उसकी इच्छा है कि पूनम इतना तो अवश्य ही सीख ले कि संसार के श्रेष्ठ उपन्यासों को पढ़ सके। ताकि उन उपन्यासों के पात्रों और घटनाओं पर चर्चा की जा सकें। शिक्षित होने का परिणाम यह होता है व्यक्ति की सृजनशक्ति बनी रहती है। विनोद किन्नर समाज के उत्थान के लिए कुछ करना चाहता है। वह समाज के लिए सकारात्मक प्रयास में जुटा रहता है। वह अपना जीवनयापन उन कार्यों से नही करना चाहता, जिससे सामान्य मनुष्यों को घृणा होती है। पूनम और विनोद का राजनीति में दुरुपयोग किया जाता है। चुनाव की वोट बैंक की राजनीति से वे दोनों अनभिज्ञ होते हैं। वहाँ के विधायक को एक किन्नर का राजनीतिक हस्तक्षेप रास नही आता और वह विनोद की हत्या करवा देता है। विनोद की हत्या किन्नर समाज के लिए बहुत ही दुखद होती है। यह मृत्यु किन्नरों को समाज में बढ़-चढ़ कर भागीदारी करने की नई ऊर्जा देती है। लेखिका ने पत्रात्मक शैली के नए कलेवर को चुनते हुए, कथानक के उतार-चढ़ावों को बहुत ही सुगठित रूप से चित्रित किया है।

लेखिका निर्मला भुराड़िया ने किन्नर विमर्श, देह व्यापार, मानव तस्करी आदि को केंद्र में रखते हुए कथावस्तु के तौर पर 'गुलाम मंडी' नामक उपन्यास लिखा है। गुलाम मंडी देह व्यापार हेतु होने वाली मानव तस्करी का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती है। लेखिका को इस उपन्यास की प्रेरणा अमेरिका यात्रा के दौरान मिली। समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जिसका स्पष्ट कारण समाज द्वारा किया जाने वाला उपेक्षित व्यवहार है। आज समाज में बुद्धिजीवी लोगों के द्वारा किन्नर विमर्श करने से यह विषय प्रमुखता से साहित्यिक धारा में उभरकर सामने आ रहा है। वर्तमान में निरंतर चर्चा-परिचर्चा किए जाने का ही परिणाम है कि अब हाशिये के लोग और परिवार भी मुख्यधारा में वापस आ रहे हैं। कल्याणी और जानकी इस उपन्यास की मुख्य पात्र हैं। इनके समानांतर अंगूरी की कथा भी चलती है। यह उपन्यास 25 खंडों मे विभक्त है। उपन्यास का कथानक पूर्वदीप्ति शैली में शुरू होता है। देह व्यापार की चकाचौंध के पीछे मानव तस्करी का जो अपराध समाज में दोगुनी गति से बढ़ रहा है। लेखिका ने उसकी परतें उघाड़कर रख दी है।

आधुनिकता की दौड़ में केवल बाहरी सौंदर्य का आकर्षण देखा जाने लगा है। इसकी पूर्ति के लिए बाजार में विभिन्न प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन उपलब्ध है। इन उत्पादों को बेचने के लिए भी आकर्षित करने वाली सुंदर स्त्री अर्थात मॉडल की जरूरत होती है। जो दैहिक सौंदर्यता को दिखाते हुए लोगों को रिझा सके। बाजार और फैशन ने स्त्री को मातृत्व क्षमता से दूर रखा है ताकि उसका दैहिक आकर्षण गर्भावस्था के कारण क्षीण न हो जाएँ। जब कल्याणी एक बच्ची को गोद लेती है। तो उसका ममत्व बोध जागृत होता है। कल्याणी किन्नर अंगूरी से बात करने की पहल करती है। अमूमन आम लोग किन्नर से बात करने में कतराते हैं। परंतु कल्याणी का अंगूरी से न सिर्फ बात करना, अपितु उसे सम्मान देना समाज में सकारात्मक बदलाव का संदेश देता है।

किन्नर समाज में कुछ ही लोग जैविक रूप से किन्नर होते हैं। अधिकांश अपनी यौनिक पहचान की अस्पष्टता के कारण इसमें शामिल होते हैं। उपन्यास में उपस्थित पात्र राजा भी कहने के लिए तो पुरूष है परंतु उसके हाव-भाव स्त्रियोचित गुणों से समृद्ध है।

[7] सौरभ, प्रदीप. (2011). *तीसरी ताली.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या – 82.

[8] सौरभ, प्रदीप. (2011). *तीसरी ताली.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या – 147.

[9] मुद्गल, चित्रा. (2016). *पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा.* नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन. पृष्ठ संख्या – 110.

राजा ऑपरेशन कराकर अपना लिंग परिवर्तित करवाना चाहता है परंतु आर्थिक तंगी के कारण विवश होता है। वह जीवनयापन के लिए नाचता-गाता है। यहीं उसके आय स्रोत है। लेखिका लक्ष्मी और जानकी जैसी गरीब लड़कियों की कहानी के माध्यम से मानव तस्करी जैसे घृणित अपराध से पाठकों को परिचित कराती है। ये बच्चियाँ मानव तस्करों के हाथों बेच दी जाती है। उन्हें जबरदस्ती नाचना-गाना पड़ता है। वर्तमान में भी रोजाना अनेक बच्चे मानव तस्करी का शिकार होते हैं।

VI. निष्कर्ष

किन्नर हमारे समाज का अभिन्न अंग है। यौनिक आचरण व्यवहार के खाँचें में फिट नहीं होने कारण उन्हें किन्नर की संज्ञा प्राप्त हुई है। इन्हें अब तृतीय लिंग के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में सरकारी कार्यों में भी अब उन्हें पहचान मिली है। किंतु फिर भी किन्नर समाज में अभी भी बहुत सारे संकट है, जिनसे निपटने को वह प्रयासरत है। पहला संकट तो सम्मान और अस्तित्व का है। किन्नर जीवन में विस्थापन की त्रासदी भयावह है। यह विस्थापन अपने घर से निकालकर किन्नर समाज में पहुँचने का होता है। दूसरा संकट आर्थिक आत्मनिर्भरता का है। उनके लिए रोजगारोन्मुख होना आवश्यक है। हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श के साथ-साथ उनकी सामाजिक उपेक्षा का कारण, आर्थिक स्वतंत्रता के विभिन आयामों को प्रस्तुत किया गया है। अब किन्नर भी शिक्षा के महत्त्व पर बल देते हैं। हिंदी उपन्यासों के किन्नर पात्रों को अब आर्थिक तंगी को पछाड़ते हुए पारंपरिक पेशा छोड़ अन्य सम्मानजनक रोजगार करते हुए भी दिखाया जाने लगा है।

किन्नरों को शारीरिक असमानता से अधिक मानसिक असमानता व्यथित करती है। लिंग दोष की दुख के साथ घर से बिछड़ने की पीड़ा सदैव उनके मन में विद्यमान रहती है। हर किन्नर के जीवन की एक अलग कहानी है। बस किन्नर समाज में आने का कारण एक है- लिंगदोष या देह विकृति। किन्नर समाज को जानने और उनकी जीवन शैली को समझने के लिए इन उपन्यासों को पढ़ना बेहतरीन तरीका है। इन उपन्यासों में बहुत कुछ काल्पनिक होते हुए भी समाज का यथार्थ है। इन उपन्यासों में किन्नर होने का दर्द, अपमान और संघर्ष को यथार्थ ढंग से प्रस्तुत किया गया है। किन्नर भी सामान्य लोगों की भांति ही अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक रीति- रिवाजों का पालन करने वाले हमारी ही तरह मनुष्य है। उनको समाज से अलग रखने की आवश्यकता नहीं हैं।

संदर्भ ग्रंथ

[1] (सं) डॉ. एम. फिरोज खान - थर्ड जेंडर : कथा आलोचना (2017), अनुसंधान पब्लिशर्स : कानपुर
[2] नीरजा माधव – यमदीप (2009), सुनील साहित्य सदन : नई दिल्ली
[3] प्रदीप सौरभ - तीसरी ताली (2011), वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली
[4] चित्रा मुद्गल - पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा (2016), सामयिक पेपरबेक्स : नई दिल्ली
[5] निर्मला भुराड़िया - गुलाम मंडी (2016), सामयिक प्रकाशन : नई दिल्ली

इंटरनेट आलेख –

[1] https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A8%E0%A4%B0#:~:text=%E0%A5%804%A4%E0%A%E0%A5%87%E0%A5%A4
[2] https://hi.glosbe.com/hi/hi/%E0%A4%95%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A8%E0%A4%B0
[3] https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Transphobia?_x_tr_sl=er_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc